विश्व में
राम

संपादक
डॉ नीता त्रिवेदी

विश्व में राम

संपादक
डॉ. नीता त्रिवेदी
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

QUIGNOG
भारत

विश्व में राम

Copyright © डॉ. नीता त्रिवेदी 2021

Published by QUIGNOG
A PIRATES Imprint.
www.quignog.com

Typeset in Karma 9.5/15

1/21

Pirates is proud to offer this book to our readers; however, the story, the experiences, and the words belong to the respective authors. The views expressed in the book do not necessarily represent or reflect the views of this publishing house.

All rights reserved.

For worldwide sale.

Pirates is committed to a sustainable future for our business, our readers and our planet. This book is made from Forest Stewardship Council® certified paper.

अनुक्रमणिका

संपादकीय

Message - Dr. Anita Bose
Chief Convenor, Global Encyclopedia of the Ramayana

1. श्री राम: आदर्श का परम विग्रह — 1
   प्रो. बी. एल. चौधरी

2. सत्यनिष्ठा एवं श्रीराम — 6
   प्रो. नीरज शर्मा

3. वैश्विक परिदृश्य के रामकाव्य परंपरा का प्रवासी महाकवि आदेशकृत परम महाकाव्य 'रघुवंश शिरोमणि श्रीराम' — 15
   प्रो. नरेश मिश्र

4. कन्नड़ रामायण — 25
   -प्रो. बी. वै. ललिताम्बा

5. तमिल के प्राचीन राम साहित्य और कंब रामायण — 32
   -प्रो. एम. ज्ञानम
   -प्रो. ए. मरुद दुरई

6. आंचलिकता और समाज - विज्ञान के निकष पर रामाख्यान — 42
   डॉ. विनय कुमार पाठक

7. रूस में रामलीला का इतिहास और परंपरा — 48
   डॉ. रामेश्वर सिंह

8. पूर्वोत्तर भारत में वैष्णव मत का उद्भव एवं विकास — 52
   प्रो. दिनेश कुमार चौबे

9. नेपाल की राम-कथा परम्परा और भानुभक्त कृत रामायण — 62
   डॉ. श्वेता दीप्ति

10. गुजराती साहित्य में रमणलाल सोनी कृत
'श्री रामकथा सुधा' का स्थान
डॉ. जशवंतभाई डी. पंड्या 71

11. वैश्विक परिदृश्य में रामकथा- विविध रंग
सुनील पाठक 79

12. वर्तमान युग में रामकथा की प्रासंगिकता
डॉ श्वेता उपाध्याय 86

13. भुशुण्डि रामायण का वैशिष्ट्य
डॉ. राजेश श्रीवास्तव 97

14. तुलसी काव्य में समन्वय
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह, 107

15. आधुनिक कविता और रामायण के विविध सदंर्भ
डॉ. नीतू परिहार 121

16. रामायण: एक नहीं अनेक (रामानन्द सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में)
महेश शर्मा (शास्त्री कोसलेन्द्रदास) 132

17. राम साहित्य में राम की वियोग-अभिव्यंजना
डॉ. प्रीति भट्ट 140

18. आधुनिक काव्य में रामकथा का बदलता स्वरूप
डॉ. कुलवंत सिंह 147

19. रामकथा और राधेश्याम रामायण
डॉ. नवीन नंदवाना 159

20. पंजाब में रचित राम काव्य की अज्ञात एवं अल्पज्ञात पांडुलिपियां
(भाई गुरदास पुस्तकालय का संदर्भ)
डॉ. सुनीता शर्मा 179

21. रामकथा के कितने नाम
डॉ. आशीष सिसोदिया 190

22. आधुनिक मानव नियति के संदर्भ में राम 194
डॉ. मंजु त्रिपाठी

23. रघुवंशमहाकाव्य में 'राम' 199
डॉ. विजय कुमार चतुर्वेदी

24. रामलीला और अंकिया नाट
(राम कथा के दो नाट्य रूपों पर एक तुलनात्मक दृष्टि) 204
डॉ. संगीता माहेश्वरी

25. स्त्री स्वाभिमान की प्रथम दीपशिखा - वैदेही 213
डॉ. नवनीतप्रिया शर्मा

26. तुलसी का मानस और वैश्विक परिदृश्य 222
डॉ. संजू श्रीमाली

27. आधुनिक संदर्भों में राम कथा की प्रासंगिकता 232
डॉ. मधुबाला सांखला

28. आधुनिक युग में रामकथा का बदलता स्वरूप
"सीता-मिथिला की योद्धा" उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में 238
डॉ. मनीषा शर्मा

29. उत्तररामचरितम् में राम का द्विविध चरित्र 245
डॉ. शान्ति लाल सालवी

30. राजस्थानी साहित्य परम्परा एवं श्रीराम 252
डॉ.सुरेश सालवी

31. सीता: एक निर्वचनात्मक विश्लेषण 264
डॉ. सुमित्रा शर्मा

32. मानव जीवन के आदर्श: राम 278
डॉ. ज्योति गुप्ता

33. राम का आदर्श और उसका विस्तार 287
डॉ. स्मिता शर्मा

सीता: एक निर्वचनात्मक विश्लेषण

डॉ. सुमित्रा शर्मा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर

प्रस्तावना

भारत एक परंपरावादी समाज रहा है, यहाँ की परंपराएँ पुरातन हैं, जो अपने मूल स्वरूप को बनाए हुए लगातार आगे बढ़ती जा रही हैं। परंपराओं में लिखित एवं मौखिक परंपराएँ सम्मिलित की जाती हैं। लिखित परंपराएँ वृहद परंपराएँ होती हैं, जिनका फैलाव क्षेत्र विस्तृत होता है एवं मौखिक परंपरा लघु परंपराएँ होती हैं, जो क्षेत्र विशेष की स्थानिकता के साथ जुड़ी होती है। इन्हीं परंपराओं के प्रमुख भाग होते हैं- शास्त्र, पुराण, वृतांत, मिथक आादि जो परंपराओं को जीवंत बनाए रखते हैं साथ ही उन्हें गति भी प्रदान करते हैं। इन्हीं शास्त्रों के आधार पर समाज में आदर्श प्रतिमानों का निर्धारण किया जाता है। इन शास्त्रों में प्रमुख शास्त्र रहा है - रामायण, जो लिखित परंपराओं पर आधारित होने के कारण जहाँ एक और वृहद परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं थोड़े बहुत भेद के साथ मौखिक परम्पराओं से जुड़कर स्थानीयता के साथ भी अपनी विशिष्टता एवं निरंतरता को बनाए रखता है। रामायण के कई स्वरूप निर्वचनात्मक अन्तर के साथ देखे जा सकते हैं। ये स्वरूप भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी देखे सकते हैं। महाकाव्य, शास्त्र या अन्य प्राचीन ग्रंथ उस समय के समाज का आइना होते हैं। जिसके आधार पर पुरातन समाज एवं सामाजिक जीवन पद्धति को भली भांति समझा जा सकता है। रामायण के माध्यम से राम के समय में समाज की सामाजिक संरचना एवं प्रचलित सामाजिक मानदण्डों, मूल्यों, जनरीतियों, रूढियों, नियमों आदि को आसानी से समझा एवं निर्वचन किया जा सकता है। प्रस्तुत प्रपत्र में रामायण के विभिन्न स्वरूपों के अध्ययन के आधार पर रामायण की प्रमुख पात्र सीता का निर्वचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

सीता का जन्म: एक निर्वचन

पश्चिमी विचारधारा रामायण को ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ में रखने को प्राथमिकता देते हैं इसे किसने कब और कहां लिखा इस तर्क पर बल अधिक होता है। पारंपरिक भारतीय सोच इसे समय एवं काल से मुक्त रखना पसंद करती है। विद्वानों के राम समय एवं स्थान से बंधे हैं तथा भक्तों के राम मनुष्य के मन में है, वे असीम और शाश्वत है। रामायण समन्वयन आज्ञापालन धर्मतंत्र और सदाचार के आदर्शों का समर्थन करने वाला महाकाव्य है। यह एक अनुशासनात्मक वृत्तांत है, जिसके नायक मर्यादा पुरुषोत्तम राम है और नायिका आदर्श नारी सीता है। सीता को आदर्श नारी का दर्जा दिलाने में सीता द्वारा किए गए त्याग तथा धैर्य, सहनशीलता आदि गुणों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। रामायण में सीता की कथा में वे घटनाएँ जो एक स्त्री के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण हैं जो उसे आदर्श नारी बनाने में सहायक होते हैं, वे हैं- सीता का जन्म जो एक मानवीय प्रक्रिया से नहीं बल्कि एक प्राकृतिक प्रक्रिया से हुआ है जो उसे एक अलौकिक स्वरूप प्रदान करता है।

सीता धरती से जन्मी एवं ऋषियों मुनियों के साथ पली-बढ़ी है। पवित्र भूमि की हल रेखा से सीता के मिलने पर किसानों ने कहा कि वह जनक के बीज का फल नहीं है तो वह उनकी पुत्री कैसे हो सकती हैं, यहां जनक उत्तर देते हैं कि 'पितृत्व बीज से नहीं हृदय के भीतर से अंकुरित होता है' और उन्होंने घोषणा की कि यह धरती की पुत्री भूमिजा है, मैं इसे सीता कहूंगा वह सीता जिसने मुझे पिता के रूप में चुना है। सीता प्रकृति के पालिका बनने तथा मानव सभ्यता के उदय होने का मूर्त रूप बनती है। वेदों में सीता को उर्वरता की भगवती के रूप में मान्यता दी गई है। महाभारत के राम उपाख्यान में सीता जनक की जैविक पुत्री है। प्रादेशिक संस्करणों में सीता एक संदूक में मिलती है या भू-देवी राजा जनक को कन्या उपहार में देती हैं, जैन वासुदेव हिंदी तथा कश्मीरी रामावतार चरित्र में सीता रावण की पुत्री हैं, और उसे सागर में फेंका गया है, वहां से वे राजा जनक के पास पहुंची है। आनंद रामायण में विष्णु पाक्ष नामक राजा को एक फल देते हैं, जिसमें एक कन्या है, जो लक्ष्मी का अवतार है उसका नाम पावती रखा गया, वही सीता है। सीता का जन्म मां के गर्भ से नहीं हुआ इसीलिए वह अयोनिजा कहलाती है। ऐसी संतान विशिष्ट होती है तथा मृत्यु को भी अपने वश में कर सकती हैं। तर्कवादियों के अनुसार सीता एक परित्यक्ता शिशु है।

अतः सीता के जन्म का निर्वचन कई प्रकार से किया गया है। सीता जनक की जैविक पुत्री नहीं होती लेकिन राजा जनक बिना किसी संदेह के सीता को अपनी पुत्री के रूप में सहर्ष अपनाता है और स्वयं को भाग्यशाली समझता है कि सीता ने उसे पिता के रूप में चुना। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उस समय लैंगिकता के आधार पर समाज के समानता थी, क्योंकि नही तो विदुषी गार्गी राजा जनक द्वारा आयोजित किये गए शास्त्रार्थ में यह प्रश्न क्यों उठाती कि 'राजा दशरथ के मन में पुत्र की इच्छा बलवती क्यों थी? वहीं दूसरी ओर राजा जनक अपनी पुत्रियों से ही संतुष्ट क्यों हैं ?

सीता एक विदुषी महिला

राजा जनक ने शास्त्रार्थ के लिए ऋषि-मुनियों को अपने दरबार में बुलाया वह शास्त्र लंबे समय तक चला जिससे वेदों की रचना हुई इस शास्त्रार्थ के दौरान सीता छोटी अवस्था से युवावस्था की ओर अग्रसर हो रही थी, और उसमें उपस्थित भी रहती है। जब सीता ने शास्त्रार्थ पूर्ण होने पर याज्ञवल्क्य की पत्नी कात्यायनी का मत सुना के बुद्धिमानों को भी अंततः आहार व भोजन की आवश्यकता होती है, तो सीता ने विचार किया मिथिला में आने वाले सैकड़ों ऋषि मुनियों के भोजन का प्रबंध कहां से होता था व कौन उस व्यवस्था को देखता था? रिक्त हुए बर्तनों में जल कौन भरता था? यही जिज्ञासा उन्हें रसोई में ले गई और वे पाककला में भी पारंगत हो गई। सीता दरबार एवं रसोई दोनों के कार्यों को अच्छे से जानती थी और उनका मत था कि इससे मस्तिष्क का विस्तार होता है। अयोध्या में सीता की रसोई जिसमें पूजन की वस्तुओं में बेलन व चकला भी सम्मिलित किया जाता है।

विवाह के समय जनक ने सीता की दुविधा को दूर करते हुए कहा कि 'उन्हें विवाह से प्रसन्नता पाने की आकांक्षा रखने के बजाय विवाह को प्रसन्नता पूर्ण बनाए रखने पर बल दिया जाना चाहिए। देवदत्त पटनायक के अनुसार सीता अनेक ऋषि-मुनियों से भेंट करती रहती है अतः उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान है। ताड़का वध से पूर्व राक्षसों के हमले होने पर ऋषि विश्वामित्र द्वारा राक्षसों द्वारा बोली जा रही भाषा का अनुवाद करने के लिए सीता को कहते हैं की 'जनक पुत्री क्या तुम राक्षसों की बोली को समझ सकती हो'।

स्त्रियों की अशुद्धता पर जितनी चर्चा की गई है, पुरुषों के संदर्भ में इसे उतना नहीं उठाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्रियों को ऐसी संपत्ति के रूप में देखा जाता है, जिन की सीमाओं का उल्लंघन नहीं होना चाहिए। पवित्र नारी उसे माना जाता है जो पूरी निष्ठा के साथ एक ही पुरुष के साथ हो, जबकि पुरुषों में पवित्र वह था जो ब्रह्मचारी हो। स्त्रियों को सती एवं पुरुषों को संत कहा जाता था। रावण जब सीता का हरण करके लंका में अपने महल में ले जाने लगता है तो मंदोदरी द्वारा उसे रोका जाता है। मंदोदरी कहती है 'किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध उस घर में न लाए, विलाप करती हुई स्त्री हमारे लिए दुर्भाग्य का न्योता लेकर आएगी। रावण कहता है कि वह उसे अशोक वाटिका में रखेगा लेकिन तब तक ही जब तक स्वयं सीता अपनी इच्छानुसार महल में आने को तैयार न हो जाए और उसके आने के पश्चात मंदोदरी के सारे अधिकार एवं पद सीता को दे दिये जाएंगे और मंदोदरी को उसकी दासी बनना पड़ेगा। इस चुनौती को मंदोदरी स्वीकार कर लेती है। इस संदर्भ को केवल सीता ही समझ सकी है कि किस प्रकार मंदोदरी ने अपने पद को भी सुरक्षित रख लिया और दूसरी स्त्री की स्वतंत्रता की भी रक्षा कर ली।

सीता एक आदर्श नारी: एक परीक्षण

कार्ल माक्र्स कहते हैं - 'इतिहास के किसी दौर में समाज की प्रगति की असलियत जाननी है तो उस समाज में औरतों की स्थिति का पता लगाइए'। वाल्मीकि शिव रामायण को आनंद रामायण का नाम देते हैं, व्यास ने इसे आध्यात्म रामायण कहा है। यहां राम नायक नहीं, वे एक भगवान हैं। सीता कोई शोषिता नहीं एक भगवती है, और रावण खलनायक न होकर भगवती की आराधना नहीं करने वाला ब्राह्मण है अतः वह भगवान को प्राप्त करने में असफल रहता है। स्त्रियों की अधिकतर रामायण मौखिक ही रही है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्त्रियों द्वारा गाए गए गीतों में महाकाव्यों के वर्णन के बजाय घरेलू अनुष्ठानों तथा प्रसंगों को ही विषय बनाया गया। सौलहवीं सदी में दो महिलाओं ने रामायण की रचना की तेलुगु में मोला एवं बंगाली में चक्रवर्ती रामायण।

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक पुरूष प्रधान समाज रहा है। इस पितृसत्तात्मक की वेदी पर नारी की परीक्षा प्रत्येक कदम पर समाज द्वारा ली जाती है और इस परीक्षा में सफल नारी को ही आदर्श नारी का दर्जा दिया जाता

है। बलिदान देने वाली माँ, समर्थन करने वाली पत्नी ही आदर्श नारी हो सकती है, जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था की पोषक हो, समर्थक हो। स्त्री चाहे वह अभिजात्य वर्ग की हो या निम्न वर्ग की समाज द्वारा निर्धारित इन पितृसत्तात्मक आदर्शों का उसे पालन करना पड़ता है। इस संदर्भ में सीता ने भी इन्हीं आदर्शों का पालन किया। सीता का विवाह जो शक्ति परीक्षण पर आधारित था, इस संदर्भ में मत है कि सीता के विवाह के लिए स्वयंवर का आयोजन किया गया। स्वयंवर का तात्पर्य है वधू द्वारा स्वयं वर का चयन करना लेकिन सीता स्वयं एक आलौकिक शक्ति है, अत इस संदर्भ में शक्ति परीक्षण की शर्त रखी जाती है। शक्ति परीक्षण का आधार है शिव धनुष जो अलौकिक है और क्योंकि सीता ने उस धनुष को अपनी बाल्यावस्था में सहज रूप से उठा लिया था जिसे वीर पुरुष भी उठा पाने में असमर्थ थे इसी कारण राजा जनक ने धनुष को सीता के विवाह के संदर्भ में शक्ति परीक्षण की शर्त के रूप में रखा, जिससे उनकी पुत्री को उसके अनुरूप योग्य वर मिल सके। स्वयंवर में सीता द्वारा समाज के आदर्शों का पालन किया जाता है।

दूसरा प्रसंग आता है राम के वनवास में जाने का जिसमें सीता का अपने पति राम के साथ निर्वासित हो वन में जाना, जिसमें सीता स्त्री धर्म की व्याख्या करती है और प्रत्येक सुख-दुख में पति के साथ रहने को ही उचित मानती है, तथा उसे ही स्त्री धर्म की संज्ञा देती है। यह तथ्य भी उसे समाज की आदर्श नारी के रूप में आगे बढ़ाता है। पुरुषवादी समाज में किसी से भी बदला लेने का आधार भी स्त्री को ही बनाया जाता है, क्योंकि रामायण कथा में वर्णन है की सूर्पनखा की नाक लक्ष्मण ने काटी लेकिन यहां प्रश्न उठता है कि आखिर सीता का अपहरण क्यों किया गया इस संदर्भ में सीता की कोई भूमिका नहीं थी, इसके बावजूद सीता को कमजोर मानकर उसके आत्मसम्मान एवं अस्तित्व को ठेस पहुंचाकर एक पुरुषवादी समाज में एक पुरुष द्वारा दूसरे पुरुष से बदला लेने एवं उसे नीचा दिखाने के लिए बदले की वेदी पर चढ़ाई जाती है एक नारी सीता। निर्दोष होने के बावजूद सजा एक नारी को ही मिलती है।

रावण द्वारा हरण किए जाने के पश्चात लंका में उसकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने और उसे रावण द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कई तरह के प्रलोभन दिए जाते है, उसका तिरस्कार किया जाता है डराया और धमकाया जाता है एवं उसके आत्मसम्मान को भी ठेस पहुंचाई जाती है। इन विपरीत

परिस्थितियों में भी सीता आदर्शों का अनुसरण करती है और अपनी अस्मिता एवं परिवार की मानमर्यादा को बचाए रखने के लिए इन विपरीत परिस्थितियों में सीता 'स्व' के लिए संघर्ष करती है। विशेष रुप से मानसिक आधार पर प्रताड़ित होते हुए भी सीता अपने सम्मान एवं सतीत्व की रक्षा के लिए प्रयासरत रहती है। सीता के स्व एवं अस्मिता की रक्षा का प्रयास स्वयं रावण की पत्नी मंदोदरी द्वारा भी किया जाता है।

सीता अपने मूल्यों एवं आदर्शों पर अडिग है और अपने प्राणों की परवाह किए बिना रावण से अहिंसात्मक संघर्ष करती है यह उसके आदर्शों की शक्ति ही है जो एक पुरुषवादी समाज में उसने एक पुरुष को शक्तिहीन बना दिया। बंदी सीता लंका में अशोक वाटिका में बहुत प्रयास पूर्वक अपने सतीत्व की रक्षा करती है लेकिन पुरुष का अहम भाव के कारण युद्ध के पश्चात राम द्वारा सीता को अपनाने से इंकार कर दिया जाता है। फलस्वरुप अपनी पवित्रता को सिद्ध करने के लिए सीता द्वारा अग्नि परीक्षा दी जाती है और उस परीक्षा में सफल होने पर ही उसे राम स्वीकार करते हैं। सीता द्वारा दी गई है- अग्नि परीक्षा पुरुष प्रधान एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था की समर्थक एवं पोषक ही रही, जिसमें सीता को एक आदर्श नारी का स्थान दिया गया। यदि सीता यहां इन पितृसत्तात्मक मूल्यों का विरोध करती एवं अग्नि परीक्षा के लिए मना कर देती तो शायद परिणाम कुछ और होते। सीता द्वारा दी गई अग्नि परीक्षा को समाज में आज भी एक आदर्श प्रतिमान के रुप में माना जाता है परिणामतः समाज में आज भी नारी से हर कदम पर सीता की तरह आदर्शों के पालन की अपेक्षा की जाती है कि वह बिना किसी प्रतिवाद के पितृसत्तात्मक मूल्यों को सहज रुप से अपनाते रहने की अपेक्षा की जाती है। जो महिला इन मूल्यों को अपना लेती है वही आदर्श नारी है और जो इन मूल्यों का प्रतिवाद करती है वह आदर्श नारी कैसे हो सकती है।

सीता की परीक्षा का अंत यहीं नहीं होता वरन इस वेदी पर उन्हें कई बार चढ़ाया जाता है। अयोध्या आने के पश्चात राम का राज्य अभिषेक किया जाता है यहां सीता को महारानी सीता का दर्जा अवश्य मिलता है लेकिन महारानी अयोध्या की महारानी का नहीं, क्योंकि नहीं तो क्या कारण है कि लोकोपवाद के कारण उन्हें वन में जाने पर मजबूर किया जाता वह भी गर्भावस्था के दौरान? क्या अपने पुरुषवादी अहम की पुष्टि के लिए या समाज की झूठी मान

मर्यादा की रक्षा के लिए? सीता भी इसका विरोध ना करके उसे स्वीकार करती है और वन में अकेली चली जाती है। राम वनवास के समय सीता के राम के साथ वन में जाने को स्त्री धर्म के रूप में देखा जाता है तो सीता के वन गमन के समय राम द्वारा सीता के साथ वन में जाने का निर्णय क्यों नहीं लिया गया? यहाँ आदर्श पति एवं आदर्श पत्नी के मानदंडों में भिन्नता स्पष्टतः देखी जा सकती है।

वन में अपने जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत करने के कारण ही सीता को वनदेवी की भी संज्ञा दी जाती है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में क्योंकि सीता ने मूल्यों का बिना किसी विरोध के अनुसरण किया इसी कारण समाज में उसे आदर्श नारी का स्थान मिल सका लेकिन उस पद को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कितनी पीड़ा सहन की उसकी चर्चा कोई नहीं करता। सीता की भावनाओं एवं मनोभावों के साथ समाज द्वारा खिलवाड़ किया गया उसका क्या? क्या महिला एक शरीर मात्र है या उस शरीर में भावनाओं एवं इच्छाओं का भी समावेश है, यह समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है या मात्र प्रश्न बनकर रह गया।

सीता वन में संतान लव और कुश को जन्म देती है और लव कुश द्वारा बड़े होने पर राम की सभा में रामायण का पूरा वृतांत सुनाया जाता है, जो सभी को विचलित करता है। ऐसे में सीता वहां आती है और इस समय भी सीता की त्याग एवं समर्पण की वेदी पर ही परीक्षा ली जाती है, लेकिन यहां सीता उन मूल्यों का प्रतिकार सीधे रूप में ना करके स्वयं के धरती में समा जाने के रूप में ही करती है। सीता अपने आत्मसम्मान का प्रश्न उठाती है, उस पितृसत्तात्मक समाज में जहां कदम कदम पर उसकी परीक्षा ली जाती है। समाज द्वारा सीता के धरती में समा जाने के संदर्भ को भी आदर्शात्मक रूप में ही लिया जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक का यह घटनाक्रम पत्नीत्व और मातृत्व, जुदाई और अलगाव इन सभी स्थितियों से होकर वह गुजरती है। यह घटनाएं न केवल रामायण में सीता के चरित्र को गढ़ती है वरन् उस समय के समाज की स्थिति एवं समाज में नारी की सामाजिक प्रस्थिति को भी इंगित करती हैं। उस व्यवस्था पर प्रश्न उठाती है कि जब राज्य के वैभवशाली अभिजात्य वर्ग की महिला की स्थिति ऐसी हो सकती है तो उस समय के समाज में निम्न वर्ग की या अन्य महिलाओं की स्थिति कैसी होगी?

निर्वचन के विभिन्न आधार

रामायण के समय अंतराल के साथ विभिन्न रूपांतरण आए, उनमें उठे प्रश्न रामायण की इन्हीं सभी घटनाओं पर आधारित है लेकिन उनके संदर्भ परिवर्तित हो जाते हैं। वाल्मीकि रामायण में राम को अवतार मानकर नहीं पूजा गया और न ही उन्हें अपने देवता होने का एहसास है। वह एक साधारण व्यक्ति की तरह है, इसीलिए पूरी कथा चरित्र निर्माण और उनके मूलभूत मूल्यों को सुदृढ़ बनाने की है। वचनबद्धता पिता की दुविधा और प्रजा की आलोचना को स्वीकार करना आदि। वस्तुतः उनका व्यवहार दूसरों के मूल्यांकन से संचालित होता है।

वाल्मीकि रामायण सीता के जन्म एवं विवाह को दोनों को मिला देते हैं इस संदर्भ में मत है कि जनक कहते हैं 'जब मैं एक दिन पवित्र भूमि पर हल चला रहा था तो मेरे हल का फल एक छोटी लड़की से टकराया... मैंने घोषणा की कि क्योंकि उस बच्ची का जन्म किसी स्त्री की कोख से नहीं हुआ अतः उसका विवाह शक्ति परीक्षण के आधार पर ही होगा' पॉल रिचमैन ने 1992 में रामायण पर एक संकलित संग्रह प्रकाशित किया था 'Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia' इस संग्रह में प्रकाशित ए. के. रामानुजन के लेख 'Three Hundred Ramayans' के संदर्भ में पॉल रिचमैन का मत है कि यह लेख रामायण परंपरा को एक नए ढंग से देखने को मजबूर करता है रामानुजन एक दक्षिणी भारतीय लोक रामायण का उल्लेख करते हैं और इस विशेष वृत्तांत में बताते हैं कि सीता रावण की बेटी थी जिसका जन्म एक छींक से हुआ था। रावण जब अपनी पत्नी मंदोदरी को धोखा देता है और एक ऋषि से अपना वादा तोड़ता है तो दंड के रूप में वह गर्भ धारण करता है और नौवें दिन एक कन्या का जन्म होता है, जिसे रावण एक डिब्बे में रखकर जनक के खेत में छोड़ देता है। रामायण के कुछ रूपांतरण में कुछ मिथक मिलते हैं जिसमें सीता को इसलिए छोड़ा जाता है क्योंकि भविष्यवाणी थी कि रावण का अपनी बेटी के हाथों ही वध होगा।

वाल्मीकि सीता स्वयंवर को रोमांचकारी बनाने का कोई प्रश्न नहीं करते लेकिन अन्य रामायण कामबाण इस शक्ति परीक्षण का प्रयोग रोमांचकारी तरीके से करते हैं। वह सीता एवं राम की पहली मुलाकात का वर्णन बड़े ही शृंगार पूर्ण तरीके से करते हैं साथ ही सीता के सौंदर्य का वर्णन भी करते हैं और राम का सीता के प्रति आकर्षण विशिष्ट रूप में एक आत्मविश्वास के साथ

दर्शाते, लेकिन यह आत्मविश्वास आगे जाकर राम के मन में सीता के व्यवहार को लेकर उठी शंका से मेल नहीं खाता। Flip Lutgendorf ने अपने लेख 'The Secret life of Ramachandra of Ayodhya' में बताया है कि राम की दो लीलाएं थी एक धरती पर और दूसरी लोकोत्तर। पारंपरिक घटनाओं के अलावा एक गुप्त जीवन है, जहां श्रृंगार आत्मिक आकर्षण अथवा माधुर्य का प्रभुत्व है और जहां राम अपनी परम वास्तविकता को प्रकट करते हैं, भले ही वे शक्ति की पितृसत्तात्मक संरचना और प्रभुत्व को पोषित करती है, विशिष्ट है।

स्त्रियों और पुरुषों पर निम्न नैतिक नियमों को लागू करके और सार्वजनिक रूप से नैतिक और अनैतिक के मानदंड स्थापित करके, पतिव्रता की धारणा अपने धर्म का पालन करने वाली पत्नी जो पति के प्रति तन और मन से समर्पित है और स्वयं को पूरी तरह से उसके अधीन कर देती है। रोमांचकारी आदर्श और उसके नैतिक मूल्यांकन दोनों पर आधारित हैं, और उसका लक्ष्य है नियंत्रित इच्छा को एक दिशा प्रदान करना। सीता के पतिव्रत की परीक्षा तब होती है जब वह राम के साथ वनवास जाने के लिए आग्रह करती हैं यहाँ उसका स्त्री धर्म उर्मिला के स्त्री धर्म से विपरीत है। सीता के अपहरण के प्रसंग को इससे पहले जो घटनाएं घटी है, उससे अलग करके नहीं देखा जा सकता। विशेषकर राक्षस विरोध का राम के शब्द विशिष्ट है कि 'कोई अन्य पुरुष सीता को छुए, मैं यह सहन नहीं कर सकता। मुझे अपने पिता की मृत्यु और राज्य के खो जाने से इतना दुख नहीं है जितना इस बात से (वाल्मीकि-230)। राम का यह वक्तव्य पुरुषवादी अहं को प्रदर्शित करता है। सीता राम के इस दृष्टिकोण को पसंद नहीं करती और समाज में पुरुष की इच्छा से जुड़ी तीन दुर्बलताओं को बताती है- किसी दूसरे की पत्नी के लिए कामना, झूठ बोलना और बिना किसी कारण के हिंसा का प्रयोग करना। राम इसमें तीसरी दुर्बलता का शिकार है।

सीता हरण की घटना तब होती है जब राम एवं लक्ष्मण जो सीता के संरक्षक है, उनकी सतर्कता कमजोर पड़ जाती है राम जानते हैं कि स्वर्ण मृग नहीं होता जिसकी चाहत सीता रखती है लेकिन वह सीता की चाहत को पूर्ण करने को आतुर हो जाते हैं। लक्ष्मण चेतावनी देता है, उसे राम एवं सीता दोनो द्वारा अनसुना कर दिया जाता है। सीता लक्ष्मण पर गलत आरोप लगाकर उसे राम के पीछे जाने को मजबूर करती है, लेकिन वाल्मीकि रामायण में कहीं भी लक्ष्मण रेखा की बात नहीं की जाती जो भारतीय भाषाओं का मुहावरा बन गया है और

इसका प्रयोग स्त्री स्वतंत्रता एवं समाज में उसकी सीमाओं के निर्धारण के लिए किया जाता है। कामबाण सीता के सतीत्व का सही कारण बताते हैं, कि रावण को एक श्राप दिया गया था कि अगर वह किसी ऐसी स्त्री को छुएगा, जिसकी उसके प्रति अनिच्छा हो तो उसकी मृत्यु हो जाएगी।

तुलसीदास की रामायण चमत्कार पर आधारित है वह कोई विवाद एवं कारण नहीं बताते वरन् सभी घटनाओं को चमत्कारों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। तुलसीदास पत्नी धर्म, स्त्री धर्म की व्याख्या करते हैं, और कहते हैं की धैर्य, धमर्, मित्र और पत्नी इन सभी का परीक्षण संकट के समय होता है तुलसीदास जी पत्नी धर्म को चार चरणों में बांटते हैं:- इनमें प्रथम सबसे श्रेष्ठ स्त्री वह है जो किसी अन्य पुरुष के संबंध में सोचती भी नहीं एवं अपने पति को ही उत्तम मानती हैं। द्वितीय वह पतिव्रता स्त्री है जो दूसरे पुरुषों को भाई, पिता और पुत्र मानती हो। तृतीय श्रेणी में वह पतिव्रता है जो धर्मपरायण है और परिवार के सम्मान का ध्यान रखती हो। चतुर्थ और निम्नतम श्रेणी उस पतिव्रता की है जो इसलिए पतिव्रता है क्योंकि उसे कोई अनुचित कार्य करने का अवसर ही नहीं मिला। तुलसीदास केवल पत्नी निष्ठा को ही श्रेणीबद्ध नहीं करते बल्कि वर्गीकरण का आधार भी निर्धारित करते हैं और वह है पति की श्रेष्ठता में विश्वास और अन्य पुरुषों की अनदेखी करना सभी पुरुषों को गैर कामुक संबंधों से जोड़ना, डर के कारण अच्छा बने रहना और मजबूरी के कारण अच्छा बने रहना। तुलसीदास जी अपनी रामायण में लक्ष्मण रेखा का उल्लेख नहीं करते सीता वन देवों के संरक्षण में छोड़ी गई है, अतः सीता अपनी रक्षा स्वयं करती है और किसी दूसरे पर उसे प्रलोभन देने का दोष नहीं जोड़ा जा सकता। इससे पूर्व सीता से राम कहते हैं कि राक्षसों का वध का समय आ गया है वह अग्नि में वास करें।

श्री प पुराण और तुलसीदास जी दोनों की रामायण में सीता के तार्किक एवं बौद्धिक शक्तियों और तर्क कुशलता को नजरअंदाज किया गया है। सीता को निष्क्रिय अनुसरण करने वाली स्त्री बना दिया गया जबकि वाल्मीकि और कामबान दोनों ने उसकी बौद्धिक शक्ति और तार्किक कुशलता का खुलकर प्रदर्शन किया है और पुरुष भी वहां मानवीय भावनाओं से प्रेरित हैं अंततः जब सीता का हरण कर लिया जाता है और रावण के विरुद्ध युद्ध जीत लिया जाता है, तो राम को सीता के सतीत्व की घोषणा सार्वजनिक रूप से की जानी चाहिए थी, जो सामान्यतः नहीं हुआ और सीता को अग्नि परीक्षण के माध्यम से गुजरना

पड़ा। आज भी उसे स्त्री की निष्ठा और सतीत्व की एक कठिन परीक्षा मानी जाती है। वाल्मीकि जिनके राम अपने देवत्व से अनभिज्ञ हैं का वर्णन अत्यंत मार्मिक है। राम ने सीता को स्वीकार किया परंतु जब सबके सामने राम ने सीता से कर्कशता से बात की तो सीता ने अपमानित महसूस किया और इस अपमान को सहन न कर पाने के कारण उस सती स्त्री ने अग्नि में प्रवेश किया। वास्तविक प्रसंग शक्ति खंड में है जिसका शीर्षक है 'युद्ध' राम सीता का स्वागत करने के अनिच्छुक है और उसके आगमन पर क्रोध व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं 'मैंने शत्रु को पराजित किया प्रिय और तुम्हें वापस जीत लिया है मुझसे जिस शौर्य की अपेक्षा की जाती थी मैंने उसका प्रदर्शन किया, मैंने अपमान का प्रतिशोध ले लिया है और अब वह मुझे उत्तेजित नहीं करता। मैंने अपने बल प्रदर्शन से अपने लक्ष्य को प्राप्त किया है मैंने अपना प्रण पूरा किया अब मैं मुक्त हूँ'(वल्मीकि-633)

इस अंश में राम 'मैं' का प्रयोग करते हैं और यह सब सीता चुपचाप बर्दाश्त नहीं करती वह भत्र्सना करते हुए कहती है कि वह अपने क्रोध में उत्तेजित होकर कुछ भी सही परिप्रेक्ष्य में नहीं देख पा रहे हैं। सीता जब एक चिता तैयार करने का आदेश देती है और उसे एक कठिन परीक्षा मानते हुए राम के अस्वीकार करने का निर्णायक कदम अपने इस विश्वास पर की सतीत्व शरीर में स्थित नहीं होता, जिसकी पुष्टि होनी चाहिए। सीता राम को प्राप्त हुई और वह अपने व्यवहार को यह कहकर उचित बताते हैं कि उन्हें इस बात की सार्वजनिक रूप से पुष्टि चाहिए थी। यह पूरा प्रसंग राम की महानता को कम करता है उधर सीता इस बात को स्थापित करती है कि सतीत्व का शरीर से कोई संबंध नहीं सार्वजनिक पुष्टि की धारणा निजी कार्य को भी सार्वजनिक बना देती है यह सामान्य भावना से ऊपर आत्मश्लाघी इच्छा है फिर उन्हें अपनी पत्नी को सबके सामने अपमानित करने में कोई संकोच नहीं होता।

श्री प पुराण में अग्नि परीक्षा का प्रश्न है ही नहीं उसके स्थान पर राम सीता को खुशी-खुशी गले लगाते हैं, कि वह लौट आई है लेकिन इस रूपांतर में दूसरे वनवास का प्रसंग है जहां लक्ष्मण अपने बड़े भाई से बहस करता है कि जनमत के आधार पर किसी की प्रतिष्ठा पर लांछन नहीं लगाया जा सकता इसमें निर्वासन के समय सीता को छोड़ने लक्ष्मण नहीं वरन राम का सेनापति जाता है। राम के निर्णय को निर्दयी बताते हुए उनके व्यवहार को अनुपयुक्त माना गया है। जैन रामायण में भी कई परिवर्तन दिखते हैं निर्वासन में सीता की देखभाल

वाल्मीकि के बजाए पुंड्रीकपुर का राजकुमार वृजरोध करता है, जो उसे अपनी बड़ी बहन की तरह मानता है। डेविड शुलमैन ने अपने लेख 'Fire and Flood: The Testing of Sita in Kamban's Ramavataram' में वाल्मीकि और कामबाण रामायण में वर्णित अग्नि परीक्षा के प्रसंगों का विश्लेषण किया और उसे स्त्री के सम्मान साहस श्रेष्ठता की पुष्टि के रूप में वे देखते है और कहते है, राम जैसा सामान्य पुरुष होने की अपेक्षा सीता जैसी महान स्त्री होना बेहतर है। सीता सतीत्व की सार्वजनिक घोषणा कर राम की सीमित दृष्टिकोण को अनावृत करती है। चिता की आग भी उसके सतीत्व की आग से प्रज्वलित होती है। सीता शक्ति उपार्जित करती है अगर यह विरोध अथवा प्रतिकार नहीं है तो और क्या है। इसी लेख में आगे लव और कुश अपने पिता के विरुद्ध होते हैं, वे अपनी मां के दृष्टिकोण से रामायण राम को सुनाते हैं। इस कहानी में भी आगे एक बार राम फिर सीता को अपना सतीत्व को सिद्ध करने के लिए कहते हैं, जन प्रदर्शन और अनुमोदन के लिए और फिर सीता राम के पास लौटना स्वीकार नहीं करती, परंतु स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अपनी जीवन लीला को समाप्त कर लेती है। सीता कहती हैं अगर मैंने राम के अलावा किसी अन्य पुरुष के संबंध में सोचा भी नहीं तो हे देवी माधवी (पृथ्वी) मुझे अपनी गोद में ले लो। सीता ने इस तरह एक साथ अपने सतीत्व और अपनी श्रेष्ठता को स्थापित किया वह एक बार भी राम के समक्ष न झुकती है नहीं अनुरोध करती है। दोनों परीक्षण के समय वह राम की विरोधी भूमिका को पहचानती है और उनके साथ एक अलग व्यक्ति की तरह व्यवहार करती है किंतु बराबर से अथवा नियंत्रक के रूप में नहीं ।

यह जनमत है कि जब सीता धरती में समाती है तब उसके मात्र केश ही धरती पर दुर्वा के रूप में दिखाई देते हैं। सीता का संबंध सदा से ही वनस्पति से जोड़ा जाता है, विशेष तौर पर कुश/कुशा का संबंध सीता के केशों से जोड़ा जाता है। यह एक तीखी घास है जो पवित्र मानी जाती है। इस प्रकार सीता का निर्वचन मात्र एक आधार पर नहीं किया जा सकता। वर्तमान में अमीष त्रिपाठी ने अपने उपन्यास 'सीता मिथिला की योद्धा' में सीता को एक स्वतंत्र शक्ति सम्पन्न नारी

स्वाभिमान को अपने संबल से जीकर दिखाने के लिए। सीता का जीवन सार्वजनिक जीवन में शुचिता, स्त्री धर्म की धर्म ध्वजा, संस्कृति की निष्कलंक प्रहरी यानी महिला के जीवन के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित किया है।

निष्कर्ष

समाज का दर्पण उसके महाकाव्य होते हैं, जो किसी भी समाज में उसके आदर्श प्रतिमानों के निर्धारण में विशिष्ट स्थान रखतें है। रामायण भी ऐसा ही महाकाव्य है, जो अनुशासनत्मक है, आदर्शात्मक है जिसके आधार पर राम एक आदर्श पुरूष एवं सीता एक आदर्श महिला के रूप में देखी जाती है। वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन ग्रंथ है जिसमें रामकथा का विवरण मिलता है इसके पश्चात कई अन्य रामायण एवं राम पर आधारित कथाएं एवं वृतांत भी लिखे गए। हालांकि उन सभी के निर्वचन में भिन्नता देखी जा सकती है। इन्हीं विभिन्न निर्वचनों के आधार पर ही राम कथा को वैश्विक परिदृश्य में पृथक पृथक दृष्टिकोण से समझा जाता है। लेकिन यह भी सही है कि इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री महिमा का मंडन या तो किया ही नही जाता या बहुत कम किया जाता है वह भी सीमित शब्दों में। रामकथा तो सर्वत्र होती है लेकिन सीताकथा कहीं नहीं। यह इस समाज के दोहरे मानदंड है कि सीता को आदर्श नारी भी माना गया लेकिन उसकी महिमा का मंडन बहुत ही सीमित शब्दों में ही किया जाता है।

संदर्भ

1. गोस्वामी तुलसीदास, 'श्रीरामचरितमानस' गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश।
2. पटनायक, देवदत्त (2017) 'सीता', पेगुइन बुक्स, इण्डिया।
3. वाल्मीकि 'श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण', गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश।
4. त्रिपाठी, अमीश (2017) 'सीता- मिथिला की योद्धा' वेस्टलैंड पब्लिकेशंस लिमिटेड, चेन्नई।
5. David Shulman (1997) '*Fire and Flood: The Testing of Sita* in Kamban's Ramavataram', in Many Ramayans: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia (ed.) Paula Richman, P-89-119, University of California Press, New Berkeley

6. Jain, Jasbir (2011). 'Indigenous Roots of Feminism: Culture, Subjectivity & Agency' Sage Publications India Ltd., New Delhi.
7. Kamban (2002)' the Kamban Ramayan' Trans. P.S.Sundaram, ed.N.S. Jagannathan, Penguin, New Delhi.
8. Lutgendorf, Philip (1997) ' The Secret Life of Ramchandra of Ayodhya' in Many Ramayans: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia (ed.) Paula Richman, P-217-234, , University of California Press,New Berkeley.
9. Ramahujan, A.K. (1997) 'Three Hundred Ramayans ' in Many Ramayans: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia (ed.) Paula Richman, P-22-49, University of California Press,New Berkeley.